RARE BOOK

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या
Class No. H 891.4318
पुस्तक संख्या
Book No. H 474 p
रा० पु०/ N. L. 38.

MGIPC--S4—9 LNL/66—13-12-66—1,50,000.

H
891.4318
H 474 p

NATIONAL LIBRARY
No. 6853C
Dt. 28-11-57
CALCUTTA

PREM FULVARI

प्रेमफुलवारी

SHELF LISTED

SP 1/97

हरिश्चन्द्र

ने

बनाई

HARISHCHANDRA

इश्क चमन महबूब का वहां न जावै कोय
जावै सो जीवै नहीं जिवै तो बौरा होय
सीस काट आगे धरै तापर राखै पाय
इश्क चमन के बीच में ऐसा हो तो जाय
"जीवन की सुधि लीजो मुरझि न जाय"

1/96

मल्लिकचन्द्र और कम्पनी द्वारा विक्रीत

बनारस

मेडिकल हाल के छापेखाने में मुद्रित हुई

सन १८८३ ई०

1883

DEDICATION.

मेरे प्यारे

तुम्हें कुंजों में या नदियों के तटों पर फिरते प्रायः देखा है और इस्से निश्चय होता है कि तुम बड़े सैलानी हो पर जो मन मानी सैल करने में तुम्हारे कोमल चरनों में जो कंकरियां गड़ती हैं वह जी में कसकती हैं इस्से मैं ने रच रच कर यह फुलवारी बनाई है सींचते रहना यह भला मैं किस मुंह से कहूं पर जैसे इधर उधर सैल करते फिरते हो वैसे ही कभी २ भूले भटके इस "फुलवारी" में भी आ निकलोगे तो परिश्रम सफल होगा।

केवल तुम्हारा

हरिश्चन्द्र

अथ

प्रेमफुलवारी

श्रीहरिश्चन्द्र

रचित

भरित नेह नव नीर नित बरसत सुरस अथोर । जयति अपूरब घन कोउ लखि नाचत मन मोर ॥ १ ॥ जेहि लहि फिर कछु लहन की आस न चित में होय । जयति जगत पावन करन प्रेम बरन यह दोय ॥ २ ॥ चंद मिटै सूरज मिटै मिटैं जगत के नेम । यह दृढ़ श्रीहरिचंद को मिटै न अविचल प्रेम ॥ ३ ॥

१ अथ प्रेम फुलवारी की भूमि

॥ राग बिहाग ॥

श्रीराधे मोहि अपनो कब करिहौ । जुगल रूप रस अमित माधुरी कब इन नैननि भरिहौ ॥ कब या दीन हीन निज जनपैं ब्रजको बास बिलसिहौ । हरीचन्द कब भव बूड़त सौं भुजाधारि धाइ उबरिहौ ॥

अहो हरि बस अब बहुत भई । अपनी दिसि बिलोकि करुनानिधि कीजै नाहिं नई ॥ जो हमरे दोसन को देखौ तौ न निबाह हमारो । करिकै सुरत अजामिल गजकी हमरे करम बिसारौ ॥ जप नाहिं सद्धी-सात कोऊ सिधि धीर सबल नहिं धारी । हरीचन्द को बेग धाइ कै भुज भरि लेहु उबारी ॥

पियारे याको नांव नियाव । जो तोहि भजै ताहि नहिं भजनो कीनो भलो बनाव ॥ बिनु कछु किये जानि अपुनो जन दूनो दुख तोहि देनो । भली नई यह रीति चलाई उलटो अवगुन लेनो ॥ हरीचंद यह भलो निबेस्यौ ह्वै कै अंतरजामी । चोरन छाड़ि छाड़ि कै डांड़ो उलटो धन को स्वामी ॥

जानते तो हम तुमरी बानि । परम अवार करन की जन पैं जे करुना की खानि ॥ तो हम द्वार देखते दूजो होते जहां दयाल । जाने नहिं बिस्वास बेद पैं जिन तोहि कह्यौ कृपाल ॥ अब तो आइ फंसे सरनन में भयो तुम्हारो नाम । हरीचंद तासों मोहि तारो आन छोड़ि घनस्याम ॥

प्यारे अब तो सही न जात । कहा करैं कछु बनि नहिं आवत निसिदिन जिय पछितात ॥ जैसे छोटे पिंजरा में कोऊ पच्छी परि तड़पात । त्योंही प्रान परे यह मेरे छूटन को अकुलात ॥ कछु न उपाव चलत अति व्याकुल मुरि मुरि पछरा खात । हरीचंद खींचो अब कोउ बिधि काढ़ि पांच अरु सात ॥

नाहिं तो हंसी तुम्हारी ह्वैहै । तुम जौं पै जग दोस धरैगे मेरो दोस न दैहै ॥ बेद पुरान प्रमान कहो को मोहि तारे बिनु लैहै । तासों तारो हरीचंद को नाहीं तो जस जैहै ॥

फैलिहै अपजस तुम्हरो भारी । फिर तुम कों कोऊ नहि कहि है मोहन पतित उधारी ॥ बेदादिक सब झूठ होंइगे ह्वै जैहै अति ख्वारी । तासों कोउ बिधि धाइ लीजिए हरीचन्द को तारी ॥

तुम्हारे हित की भाखत बात । कोऊ बिधि अब को तारि देहु मोहि नाहीं तो प्रन जात ॥ बूंद चूकि फिरि घट ढरकावत पछि कैहै

पछितात । बाल गए कछु हाथ न ऐहै क्यों इतनो इतरात ॥ चूक्यो समय फेर नहिं पैहो यह जिय धरि कै तात । तारि लीजिए हरीचंद को छांड़ि पांच अरु सात ॥

भरोसो रीझन ही लखि भारी । हम हूं को विश्वास होत है मोहन पतित उधारी ॥ जो ऐसो सुभाव नहिं हो तो क्यों अहीर कुल भायो । तजिकै कौस्तुभ सो मनि गल क्यों गुंजा हार धरायो ॥ कीटमुकुट सिर छोड़ि पखौआ मोरन को क्यों धार्‌यो । फेंट कसी टेंटिन पै मेवन को क्यों स्वाद बिसार्‌यो ॥ ऐसी उलटी रीझ देखि कै उपजत है जिय आस । जगनिन्दित हरिचन्दहु कों अपनावहिंगे करि दास ॥

सम्हारहु अपुने कों गिरिधारी । मोर मकुट सिर पाग पेंच कसि राखहु अलक संवारी ॥ हिय हलकत बन माल उठावहु मुरली धरहु उतारी । चक्रादिकन सान दै राखो कंकन फंसन निवारी ॥ नूपुर लेहु चढ़ाइ किंकिनी खींचहु करहु तयारी । पियरो पट परिकर कटि कसि कै बांधो हो बनवारी ॥ हम नांहीं उन में जिनको तुम सहजहि दीने तारी । बानो जुगओ नीकें अब की हरीचंद की बारी ॥

हम तो लोक बेद सब छोड्यौ । जग को सब नाता तिनका सो तुम्हरे कारन तोड्यौ ॥ छांड़ि सबै अपुने अरु दूजेन नेह तुम्हहि सों जोड्यौ । हरीचंद पै केहि हित हमसों तुम अपुनो मुख मोड्यौ ॥

जो पै सावधान ह्वै सुनिए । तो निजगुन कछु बरनि सुनाऊं जो उर मैं तेहि गुनिए ॥ हम नांहिन उन मै जिन को तुम तारे गरब बढ़ाई । बोलि लेहु पृथुराजहि तो कछु मो गुन परै सुनाई ॥ चित्रगुप्त सों यदि हमरे गुन भिन्न खातन लिखि लेंगी । तो हम पाप आपुने

तिन को हारि लुटत सब देही ॥ एक समै औगुन गिनिबे कों नाग राज प्रन कीनो । नहिं गिनि गए सेस बहु रहि गयो सोई नाम तब लीनो ॥ सबै कहत हरि कृपा बड़ेरी अबहीं परिहि लखाई । पैजो मो अघ भयन भागि कै रहै न हृदय दुराई ॥ बहुत कहां लों कहौं प्रानपति इतनेहीं सब मानो । हरीचंद सो भयो सामना नीकें जुगओ बानो ॥

पिया हौं केहि बिधि अरज करौं । भूलि कहुं चूकि होय के कबहूं याही डरन डरौं ॥ भोरहि सों मेला सो लागत अरु नारिन को भारी । न्हांत खात बन जात कुंज में केहि बिधि लेहुं पुकारी ॥ महल टहल में रहत लुभाने सांझहि सों सब राती । तह को बिघन बनै कछु कहि कै यहि डर धरकत छाती ॥ बडे बडे मुनि देव ब्रह्म शिव जहं मुजरा नहिं पावैं । तहं हम पामर जीव कहो क्यों घुसि कै अरज सुनावैं ॥ एक बात बेदन की सुनि कै कछु भरोस जिय आयो । हरीचंद पिय सहज श्रवन तुम सुनतहि आतुर धायो ॥

॥ अथ प्रेमफुलवारी के वृत्त ॥

प्राननाथ तुमसों मिलिबे की कहा कहा जुगति न कीनी । पचि हारी कछु काम न आई उलटि सबै बिधि हीनी ॥ हेरि चुकी बहु दूतिन को मुख थाह सबन की लीनी । तब अब सोचि बिचारि निकाली जुगति अचूक नवीनी ॥ तन परिहरि मन दै तुव पद में लोक दृगनता कीनी । हरीचंद निधरक बिहरौंगी अधर सुधा रस भीनी ॥

इन नैनन को यही परेखो । वह सुख देखि पिया संगम को फेर बिरह दुख देखो ॥ नहिं पाखान भए पिय बिछुरत प्रेम प्रतीत न लेखो । हरीचंद निरलज ह्वै रोवत यह उलटी गति पेखो ॥

दुखी एक एक कों रोय । प्राननाथ बिनु बिरह संघाती श्रौर नांहिं नै कोय ॥ मात पिता धन धाम मीत जग निज स्वारथ को होय । हरीचंद जो सोऊ बिछुरैं तौ न मरैं क्यौं रोय ॥

पियारे क्यों तुम आवत याद । छूटत सकल काज जग के सब मिटत भोग के स्वाद ॥ जब लौं तुम्हरी याद रहै नहीं तब लौं हम सब लायक । तुमरी याद होतही चित मैं चुभत मदन के सायक ॥ तुम जग के सब कामन के अरि हम यह निहचै जानै । हरीचंद तौ क्यौं सब तुमरें प्रेमहि जग मैं सानै ॥

पियारे ऐसे तौ न रहे । जैसे भए कठोर अबै तुम तैसे कबहुं न हे ॥ हम वह नांहि कहा के मुरछित लखि तुम भुज न गहे । कहां गई वे पिछली बतियां जो तुम बचन कहे ॥ जो तुम तनिक मलिन मुख देखत छिनहू नाहिं सहे । सो हरिचंद प्रान बिछुरत किन बदन छिपाय रहे ॥

यहि डर हरि रस पूरि गयो । तन मैं मनमैं जिय मैं सब ठां कृष्णहि कृष्ण भयो ॥ भस्यौ सकल तन मन तौहू नहिं मान्यौ उमगि बह्यौ । नैनन सों बैनन सों रोक्यौ नाहिंन परत रह्यौ ॥ लघुघट तामैं रूप समुद रह्यौ क्यौं न उमगि निकरै । तापैं लाए ज्ञान कहौ तेहि जिय किन लाद धरै ॥ कौन कहै रखिबे की उलटो बहि जैहै याधार । हरीचंद मधुपुरी जाहु तुम ह्यां नहिं पैहो पार ॥

रहैं क्यौं एक म्यान असि दोय । जिन नैनन मैं हरि रस छायो तेहि क्यौं भावै कोय ॥ जा तन मन मैं रमि रहे मोहन तहां ज्ञान क्यौं आवै । चाहो जितनी बात प्रबोधो ह्यां को जो पतिआवै ॥ अमृत खाइ अब देखि इनारुन को मूरख जो भूलै । हरीचंद ब्रज तो कदली बन काटो तो फिर फूलै ॥

गमन के पहिले ही मिल जाहु। नाहीं तो जिय ही रहि जैहै तुव मुख देखन लाहु॥ जान देहु सब और चित्त के मिलि रस करन उमाहु। हरीचंद मूरति तो अपनी बारेक फेर दिखाहु॥

नैन भरि देखन हू मैं हानि। कैसे प्रान राखिये सजनी नाहिं परत कछु जानि। या ब्रज के सब लोग चवाई त्यौं बैरिन कुल कानि। देखतहीं पियप्यारे को मुख करत खवास बखानि॥ मिसियो दूर रहौ जिन बातहिं बैठि करहिं सब छानि। हरीचंद कैसी अब कीजै या ललचौंही बानि॥

प्राननाथ जो पैं ऐसी ही तुम्हैं करनही हासी। तौ पहिलेही क्यौं न कह्यो हम मरतीं दै गल फांसी॥ जिय जारन क्यौं जोग पठायो तोरि प्रीति तिनुकासी। हरीचंद ऐसी नहिं जानी हूजैं हरि बिसुवासी॥

हरिसंग भोग कियो जा तन सों तासों कैसे जोग करैं। जो सरीर हरि संग लपटानो यापैं कैसे भसम धरैं॥ जिन स्रवनन हरि बचन सुन्यो है ते मुद्रा कैसे पहिरैं। जिन बेनिन हरि निज कर गूथीं जटा होइ ते क्यौं निबरैं॥ जिन अधरन हरि अमृत पियो अब ते ज्ञानहिं कैसे उचरैं। जिन नैनन हरि रूप विलोक्यो तिन्हैं मूंदि क्यौं पलक परैं॥ जा हिय सों हरि हियो मिल्यो है तहां ध्यान केहि भांति धरैं। हरीचंद जा सेज रमैं हरि तहां बघम्बर क्यौं बितरैं॥

फेरहू मिलि लैये इकबार। इन प्रानन को नाहिं भरोसो रहैं चलन तयार॥ जो छतियन सों लगि नहिं बिछुरो प्यारे नन्द कुमार। तौ दूरहि सों बदन दिखाओ करौं लाल मनुहार॥ नहिं रहि जाय बात जिय मेरे यह निज चित्त बिचार। हरीचंद त्यौंहु कै मिस ब्रज आओ बिना अबार॥

भई सखि ये अंखियां बिगरैल ॥ बिगरि परीं मानत नहिं देखे बिना सांवरो छैल ॥ भई मतवार धरत पग डगमग नहिं सूझत कुल गैल । तजिकै लाज साज गुरुजन को हरि की भई रखैल ॥ निज चवाव सुनि औरहु हरखत करत न कछु मन मैल । हरीचन्द सब संक छाड़ि कै करहिं रूप की सैल ॥

हौस यह रहि जैहै मन मांहीं । चलती बार पियारे प्रिय को बदन बिलोक्यौ नाहीं ॥ वेदन के बदले पिय प्यारे आइ गही नहिं बाहीं । हरीचंद प्यासी ही जैहैं अधर सुधा रस चाहीं ॥

कहां गए मेरे खास सनेही । अबलौं फटी नाहिं यह छाती रही मिलन अब केही ॥ फेर कबै वह सुख धौं मिलिहै जियत कौन बिधि जिय एही । हरीचंद जो खबर सुनावै देहुं प्रान धन तेही ॥

याद परैं वे हरि की बतियां । जो बन कुंजन विहरत मधुरी कहीं लाइ कै छतियां ॥ कहां वे कुंज कहां वे खग मृग कहां वे बन की पतियां । हरीचंद जिय सूल होत लखि वही उंजेरी रतियां ॥

जोपै प्रेम निबाहि न रही । तौ क्यौं मनमोहन अपुने मुख सों रस बातें कही ॥ हम जानी सुख सों बीतैगी जैसी बीति रही । सो उलटी कीनी बिधिना नै कछू नाहिं निबही ॥ हमैं बिसारि अनत रहे मोहन औरै चाल गही । हरीचंद कहा को कहा ह्वै गयो कछु नहिं जात कही ॥

अब वे हरसैं सालत बातैं । जो नन्दनन्दन ब्रज मैं कीनी प्रेम प्रीति की घातैं ॥ वेई कुंज वही द्रुम पल्लव वही उंजेरी रातैं । एक प्रान प्यारो बिन नाहीं बिष सब लागत तातैं ॥ क्रूर अक्रूर प्रान हरि लै गयो आयो दुष्ट कहां सैं । हरीचंद बिहरत नहिं छतियां भई कुलिस की छातैं ॥

अब तो लाजहु कूटि गई री। ठोकि बजाइ नगारो दै के मैं पिय बसहिं भई री ॥ नहिं छिपाव कछु रह्यो सखिन सों खुल्यो भेद सबई री। परतछ ह्वै रोवत पिय के हित ऐसी रीति लई री ॥ चकि चकि उठत नाम पीतम को है यह रीति नई री। हरीचंद जग कहत भले हीं यह अब बिगरि गई री ॥

अरे कोउ कहो संदेसो श्याम को। हमरे प्रान पिया प्यारे को अरु भैया बलराम को ॥ बहुत पथिक आवत हैं या मग नित प्रति वाही गाम को। कोऊ न लायो पिय को संदेसो हरीचन्द के नाम को ॥

तुव मुख देखिबे की चाट। प्रान न गए अजहुं मोतन तें लागी आस कपाट ॥ नैन फेर चाहत हैं देख्यो लीने गोधन ठाट। बेनु बजावत सो मुख लालन वाही जमुना घाट ॥ अटक्यो जीव फंस्यो जग मैं फिर तुव मिलिबे की बाट। हरीचन्द हिय भयो कुलिस लोंगयो न अबलौं फाट ॥

निलज इन प्रानन सों नहिं कोय। सो संगम सुख छांड़ि अजहुं ये जीवत निरलज होय ॥ गए न संग प्रान प्रीतम के रहे कहा सुख जोय। हरीचन्द अब सरम मिटावत बिना बात ही रोय ॥

अब मैं कैसे चलूंगी क्यों सुधि मोहि दिलाई। पन घट ही पै पिया प्यारे को क्यों दियो नाम सुनाई ॥ दूर रह्यो घर गतिमति भूली पग न धस्यो अब जाई। हरीचन्द हौं तौ तबही लौं काज की जब लौं रहूं भुलाई ॥

हाय हरि बोरि दई मंझधार ॥ कीन्हीं पलकी नहिं औरैं की भली लगाई पार ॥ नेह की नाव चढ़ाय चाव सों पहिले करि मनुहार ॥ अब कहो बिन अपराध तजी क्यों सुनि है कौन पुकार ॥ लोकलाज घर

भूमि कुइई करी घात सों वार ॥ हरीचन्द तापैं उतराई मांगत है। अलिहार ॥

नैन ये लगिकै फिर न फिरे ॥ त्रिपुरी अलकन में फंसि फसिकै रहिगए तहीं थिरे ॥ पचिहारे गुरुजन सिख दैकै नाहिन रहत थिरे ॥ हरीचन्द प्रीतम सरूप में डूबे फिर न तिरे ॥

पिय सों प्रीति लगी नहिं छूटै ॥ ऊधो चाहै सो समझाओ अब तो नेह न टूटै ॥ सुन्दर रूप छोड़ि सीसा को ज्ञान लेइ को कूटै ॥ हरीचन्द ऐसो को मूरख सुधा त्यागि बिख लूटै ॥

निठुर सों नाहक कीनी प्रीति ॥ अब पछिताय हाय करि रहिगई उलटि परी सब रीति ॥ हम तन मन धन जाहित खोयो उन मानी न प्रतीति ॥ हरीचन्द कहा को कहा कीनों छलि बिधना की नीति ॥

पुरानी परी लाल पहिचान ॥ अब हम कों काहेको चीन्हो प्यारे भए सयान ॥ नई प्रीति नए चाहनवारे तुमहूं नए सुजान ॥ हरीचन्द पै जाइ कहां हम लालन करहु बखान ॥

सखीरी ये उलझौहैं नैन ॥ उरझि परत सुरझ्यौं नहिं जानत सोचत समुझत हैं न ॥ कोऊ नाहि बरजै जो इनकों बने मत्त जिमि गैन ॥ हरीचन्द इन बैरिन पाछें भए लैन के दैन ॥

सखीरी ये अखियां रिझवारि ॥ देखतही मोहन सों रीझीं सब कुल कानि बिसारि ॥ मिलीं जाइ जल दूध मिलै ज्यों नेकुन सकीं सम्हारि ॥ सुन्दर रूप बिलोकत रपटीं काचेघट जिमि वारि ॥ अब बिनु मिले होत हैं व्याकुल रोअत निलज पुकारि ॥ अपुने फल करि हमहिं कनौड़ी औार दिवावत गारि ॥ लोकलाज कुल की मरजादा तृन सम तजी बिचारि ॥ हरीचन्द इनकों को रोकै बिगरीं सगरि बिगारि ॥

सखीरी ये बिछुवारी नैन ॥ निज सुख मिले आइ पहिले पै अब लागे दुख देन ॥ दगा दई ह्वै गए पराये बिसरायो सब चैन ॥ हरीचन्द इनके बेवहारन जानि नफा कछु हैन ॥

मरम की पीर न जानै कोय ॥ कासों कहौं कौन पुनि मानै बैठ-रहौं घररोय ॥ कोऊ जरनि न जानत यारी बे महरम सबलोय ॥ अपुनी कहत सुनत नहिं मेरी केहि समुझाऊं सोय ॥ लोक लाज कुल की मरजादा बैठि रही सब खोय ॥ हरीचन्द ऐसहि निबहैगी होनी होय सो होय ॥

कोउ कित तुमरो सबै गयो । सोई हम सोई तुम तौ अब ऐसो काज भयो ॥ मान समै जिन को नेकहु दुख तुम कबहूं न सम्हारे । तेई नैन रोवत निसिबासर कैसे सहत पियारे ॥ तनिकहु लखि मम मुख मुरझानो करि मनुहार मनाओ । सोई परी धरनि पै देखत क्यों सुनै नहिं धायो ॥ हाय कहा हौं कहों प्रान पिय तुम चाहत गति ऐसी । हरीचंद पिय कहां दुराये कहो प्रीत यह कैसी ॥

जो पिय ऐसो मन मोहि दीनो । तो क्यों एक निरालो जग नहिं मो निवास हित कीनो ॥ इन जग के लोगन सों मोसों वारहिक नाहिं बनि आवै । उन करोर के मध्य एक क्यों हमसो निबहन पावै ॥ कैतो जगहि छोड़ाओ हमसों राखो कै किन मोहि । हरीचंद दुख देहु न इतनो बिनय करत हौं तोहि ॥

कुलि के दुखहु करन नहिं पावैं । कैसे प्रान रहैं जो सब बिधि हम ही भार उठावैं ॥ नैनन सदा चवाइन के डर दृग भरि पियहि न देख्यो । ताको दुख तो सह्यो कोऊ बिधि जानि करम को लेख्यो ॥ रोवन हूं में हानि भई अब प्रगट हाय नहिं रोई । तो केहि बिधि

जिय धीरज राखैं सो भाखो सब कोई ॥ सब विधि हमहि बिपति तो ऐसे जीवन हूं पै ख्वारी । हरीचंद सोयो विधिना कित जाग हमारी बारी ॥

पियारे तजौ कौन से दोस । इतनो हम हूं तो सुनि पावैं फेर करैं संतोस ॥ तुमरे हित सब तज्यौ श्रास इक तुम्हरी ही चित धारी । एक तुमारे ही कहवाए जग मैं गिरवरधारी ॥ जो कोउ तुमरो होइ सोई या जग मैं बहु दुख पावै । यह अपराध होइ तो भाखो जासों धीरज आवै ॥ कियो और तो दोस कछू नहिं अपनो जान पियारे । तुमरे ही व्है रहे जगत मैं एक प्रेम प्रन धारे ॥ जो अपुने हीं को दुख दैनो यहै आप को बानो । तो क्यौं नहि ताको अपुने मुख प्यारे प्रगट बखानो ॥ जासों चतुर होइ जग मैं कोउ तुम सों प्रेम न लावै । हरीचन्द हम तो अब तुमरे करो जोई मन भावै ॥

सुरति हू अब नहिं आवै स्याम की । प्राननाथ आरति नासन मन मोहन सब सुख धाम की ॥ वेई नैन वही मन औ तन वही चट-पटी काम की । भये कुलिस सों सब पिय बिछुरे निसि बीतत चौजाम की ॥ सुनियत लाल कहानिन मैं अब जैसे सीता राम की । हरीचन्द्र कहा कौ कहा कीनो बलि यागति विधि बाम की ॥

अब मैं कब लौं देखूं बाट । भोर भयो हौं ठाढ़ी ही रहि गई पकरें द्वार कपाट ॥ हार पहार भए बिछुरे बिख भए सुख के ठाट । सूनी सेज पिया बिनु देखत क्यों न गयो हिय फाट ॥ बिरह सिंधु मैं डूबी ग्वालिनि कहुं दिखात नहिं घाट । हरीचंद गहि बांह उठाओ जिय मति करहु उचाट ॥

हाय हरि द्वै मैं ते अब एक । कै मारो कै तारो मोहन छांड़ि

आपनी टेक ॥ बहुत भई सहि काल नहीं अब करहु विलम्ब न नेक । हरीचन्द छांड़ा हो लालन पावन पतित बिबेक ॥

नावरि मोरी भांभरी हो जाय परी मंझ धार । निसि अंधिआरी पानीलागत उलटी बहत बयार ॥ सूझत नाहिं उपाय बिनु केवट कोइ न सुनत पुकार । हरीचन्द डूबत कुसमय मैं धाइ लगाओ पार ॥

कोऊ ना बटाऊ मेरी पीर को । सब अपने स्वारथ के कोऊ देनहार नहिं धीर को ॥ कसकत सो बन रास बिलसिबो हरि संग जमुना तीर को । उलहत हियो नैन भरि आवत लखि घन धीरसमीर को ॥ कहा करौं कित जाऊं न भूलत हंसि हंसि हरिबो चीर को । हरीचंद कोऊ हाल कहत नहिं गोपराज बलबीर को ॥

अविरल जुगल कमल दृग बरसत सखि पै खीजत होइ खिस्या-नी । आजु कुंज क्यों सेज बिछाई तापै दई पिछौरी तानी ॥ हौं धोखे हीं गई सयन कों चिंतत पिय संजोग सुखदाई । दूरहि तें अभिलाख लाख करि भरि आनंद फूली न समाई ॥ ढकी सेज लखि कै पिय सोए जानि भई जिय अमित उमाही । नूपुर खोलि चली हरए गति पीतम अधर सुधा रस चाही ॥ निकट जाइ कै लाइ जुगल भुज जबै गाढ़ आलिंगन कीनो । तब सुधि आई पिय घर नाहीं उन तो गौन मधुबन कों कीनो ॥ मुरछि परी करि हाय साथही मानहुं लता मूल सों तोरी । बेसुध लखि आई ब्रजवनिता बैठि रहीं घेरें चहुं ओरी ॥ छिरकत नीर गुलाब बदन पैं आंचर पौन करत कोउ नारी । व्याकुल सखि समाज सब रोअत मनु आजुहिं बिछुरे गिरिधारी ॥ इतने हूं पै प्रान गए नहिं फिरहू सुधि आई अधरानी । हौं पापिनि जीवति ही जागी फटी न अजौं कुलिस की छाती ॥

फिर वह घर व्यवहार वहै सब कारन परैं नितहीं उठि माई। हरीचंद मेरेही सिर बिधि दीनी काह जगत अमराई ॥

रहे यह देखन कों दृग दोय। गए न प्रान अबों अखियां ये जीवति निरलज्ज होय ॥ सोई कुंज हरे हरे देखियत सोई सुकपिक कीर। सोई सेज परी सूनी है बिना मिले बलबीर ॥ वही झरोखा वही अटारी वही गली वही सांझ। वहै नाहिं जो बेनु बजावत ऐहै गलियन मांझ ॥ अजहू यही वही गौवें हैं वही गोप अरु ग्वाल। बिडरे सब अनाथ से डोलत व्याकुल बिना गुपाल ॥ नंद भवन सूनो देखत क्यों गयो नहीं हिय फाट। हरीचंद उठि बेगहि धाओ फेरहु ब्रज की बाट ॥

नंद भवन हौं आजु गई ही भूलेहीं उठि भोर। जागत समय जानि मंगल मुख निरखन नंद किशोर ॥ नहिं बंदीजन गोप गोपिका नाहिं न गौवें द्वार। नहिं कोउ मथत दही नहि रोहिनि ठाढ़ी लै उपचार ॥ तब मोहि सुरत परी घर नाहीं सुन्दर श्याम तमाल। मुरछित धरनि गिरी द्वारहिं पै लखि धाईं ब्रजबाल ॥ लाईं गेह उठाइ कोउ विधि जीव न गए अंदेस। हरीचंद मधुकर तुव आए जागी सुनत संदेस ॥

हठीले पियहो प्यारिहु को हठ राखौ। तुव बसे सों काम चलै नहिं मधुर बचन मुख भाखौ ॥ आओ मधुबन छांड़ि फेरहू दूर कुबरिहि नाखौ। हरीचंद को मान राखि कै अधर सुधा रस चाखौ ॥

॥ अथ प्रेमफुलवारी के फूल ॥

प्रीति की रीत ही अति न्यारी। लोक बेद सब सों कछु उलटी

केवल प्रेमिन प्यारी ॥ को जानै समुझै को याको बिरली जानन हारी। हरीचंद अनुभवही लखिये जामैं गिरवरधारी ॥

श्री राधे सोभा कहा कहिये। रसना अधम बहुरि अधिकारी कोऊ नहिं लहिये ॥ कासों कहिये को समुझै एहि समझि चित्त रहिये। परम गुप्त रस सब सों कहि कहि कैसे चित दहिये ॥ बिनु तुव कृपा अपार सिन्धु रस केहि प्रकार बहिये। हरीचंद एहि सोच छोड़ि सब मौन रह्यो चहिये ॥

अहो मम प्रानन हूं ते प्यारे। ब्रज के धन प्रेमिन के सरबस इन अंखियन के तारे ॥ गद्गद कंठ होत क्यों सुनतहि गुन गन परम तिहारे। उमगत नैन हियो भरि आवत उलहत रोमहुं न्यारे ॥ प्राननाथ श्री राधा जूके जसुदा नंद दुलारे। हरीचंद जुग जुग चिरजीवहु भक्तन के रखवारे ॥

पियारे थिर करि थापहु प्रेम। परम अमृत मय जबलौं रबि ससि प्रेमिन पैं करि छेम ॥ दूर करहु जग बंचन हारे ज्ञान करम कुल नेम। हरीचंद यह प्रीत दुंदुभी नितहीं गाजो एम ॥

छोडि कै ऐसे मीठे नाम। मित्र प्राणपति पीतम प्यारे जीवितेश सुखधाम ॥ क्यों खोजत जग और नाम सब करि कै युक्ति अनेक। ईश्वर ब्रम्ह नाम होत्रा सो श्रवन न जो सुख देत ॥ तजि कै तेरे कोमल पंकजपद को दृढ़ बिश्वास। हरीचंद क्यों भटकत डोलत धारि अनेकन आस ॥

अहो मेरे मोहन प्यारे मीत। क्यों न निबाही मम जीवन लौं परम प्रेम की रीत ॥ इतने हूं पै तोहि न आई मेरी यार प्रतीत। हरीचंद बलिहार रावरे भली करी यह नीत ॥

बिहरिहैं जग सिर पैं दै पावं । एक तुम्हारे हे पिय प्यारे छाड़ि और सब गांवं ॥ निन्दा करौ बतावौ बिगरी धरौ सबै मिलि नांवं । हरीचंद नहि कबहुं चूकि हैं हम यह अब को दावं ॥

निछावरि तुम पैं सो कहा कीजै । सब कछु थोरो लगत जगत मैं कैसे इन कों लीजै ॥ राज पाट घर बार देह मन धन संबंधी जात । नेम धरम कुलकानि लाज सब तृनहूं से न लखात ॥ प्रेम भरी तुमरी चितवनि की समता को जग कौन । हरीचंद तासों नहि कहिए कछु रहिए गहि मैान ॥

न जानैं गोविंद कासों रीझै । जप सों तप सों ज्ञान ध्यान सों कासों रिसि करि खीझै ॥ वेद पुरान भेद नहिं पायो कह्यो आन की आन । कहा जप तप कीनों गनिकाने गीध कियो कह दान ॥ नेमी ज्ञानी दूर होत हैं नहिं पावत कहुं ठाम । ढीठ लोक वेदहु तें निन्दित घुसि घुसि करत कलाम ॥ कहुं उलटी कहुं सीधी चालैं कहुं दोउन तें न्यारी । हरीचंद काहू नहि जान्यैा मन की रीति निकारी ॥

॥ प्रेमफुलवारी के फल ॥

रे मन कर नित नित यह ध्यान । सुंदर रूप गैार श्यामल छवि जो नहिं होत बखान ॥ मुकुट सीस चंद्रिका बनी कनफूल सुकुंडल कान ॥ कटि काछिनि सारी पग नूपर बिछिया अनवट पान ॥ कर कंकन चूरी दोउ भुज पैं बाजू सोभा देत । केसर खोर बिंदु सेंदुर को देखत मन हरि लेत ॥ मुख पैं अलक पीठ पैं बेनी नागिन सी लहरात । चटकीलो पट झिपट मनोहर नील पीत फहरात ॥ मधुर

मधुर अधरन बंसी धुनि तैसी ही मुसकानि । दोऊ नैनन रस भीनी चितवनि परम दया की खानि ॥ ऐसो अद्भुत भेष बिलोकत चकित होत सब आय । हरीचंद बिन जुगल कृपा यह लखो कौन पैं जाय ॥

श्रीराधे चन्द्रमुखी तुव नाम । तदपि चकोर मुखी सी व्याकुल निरखन रूप घनश्याम ॥ तैसेही जदपि आप नव घन से मोहन कोटिक काम । तदपि दरस तुव प्यास नैन जुग चातक रहत मुदाम ॥ कौन कहै को समुझै यामैं जो कछु करैं कलाम । हरीचंद हूं मौन निरखिए जुगल रूप सुख धाम ॥

आजु महा मंगल भयो भोर । प्राननाथ भेंटे आगम मैं चितयो प्रेम भरी दृग कोर ॥ करौं न्योछावरि प्रान जीवन धन तनिकौहिं निरखत भौंह मरोर । श्याम सरूप सुधारस सानी बानी बोलत नंदकिशोर ॥ कोटि काम लावन्य मनोहर चितवत प्रेम भरी दृग कोर । नेह भर्यौ सब अंग सलोनो आनंद रस भीज्यो प्रति पोर ॥ सिद्ध होयगो सगरो कारज प्रातहि मिल्यो प्रान पिय मोर । हरीचंद जुग जुग चिरजीओ मांगत आलिनि अंचल छोर ॥

आज चलि कुंजन देखहु जाई बिमल जुन्हाई । पत रंध्र तें घिर घिर आवत ता तर सेज बिछाई । समय निशीथ इकान्त भयो अलि कहुं कहुं खग बोलत सुख पाई । ललिता दूर बजावत बीना मधुर मृदंगहु परत सुनाई ॥ आलिंगन परिरंभन को सुख लूटत तहां जुगल रस दाई । हरीचंद वारत तन मन सब गावत केलि कन्हाई ॥

कहत हौं बार करोरन होहु चिरंजी निपट नित प्यारे देखि सिरावै हियो । सुख एक आसिख यों मेरे वारत खरब जुगा जियो ॥ जब लौं

रवि ससि भूमि समुद्र ध्रुव तारागन थिर कियो । हरीचंद तबलौं तुम पीतम अमृत पान नित पियो ॥

लाल के रंग रंगी तू प्यारी । याही तें तन धारत मिस के सदा-कसूंभी सारी ॥ लाल अधर कर पद सब तेरे लाल तिलक सिर धारी । नैननहूं में डोरन के मिस झलकत लाल बिहारी ॥ तनमें भई नहीं सुध तनकी नख सिख तू गिरधारी । हरीचंद जग विदित भई यह प्रेम प्रतीत तिहारी ॥

हमारे ब्रज की रानी राधे । जिन निज बस करि मोहन राह सब ब्रज नर नारी नाधे ॥ परम उदार धाइ सुमिरन के पहिलेहि नासत बाधे । कहि हरिचंद सोच उनको मोहि जे नहिं इनहिं अराधे ॥

सखियो याद दिवावति रहियो ॥ समय पाइके दसा हमारिहु कबहुं जुगल सों कहियो ॥ केलि कोप अरु काज समय तजि सुख मे तुम रुख लहियो । करि मनुहार जोरि कर दोऊ मेरी बिथा उलहियो ॥ जो कछु क्रोध करैं तो ताको बिनती करि करि सहियो । कहियो कबौं धाइके बाहैं हरिचन्दहु की गहियो ॥

पिया मुखचूमत अलकन टारि । सोई बाल मुंदी पलकन की छवि रहे लाल निहारि ॥ कबहुं अधर हलके कर परसत रहत भंवर निरवारि । अंजन मिसी सिन्दूर निरखि रहे टरत न इक पल टारि ॥ जागी भरि आलस भुज सों गहि पियतम को भुज नारि । खींचि चूमि मुख पास सोवायो हरीचन्द बलिहारि ॥ २ ॥

पियारे केहि बिधि देहुं असीस । नित नित तो हम कहत जियो तुम मोहन कोटि बरीस ॥ तऊ न बोध होत मेरे जिय नित उठि यहै मनाऊं । कबहुं न बदन पिया प्यारे को मुरझयो देखन पाऊं ॥ तुम

SP 1/97

जीओ तुमरे जन जोंलैं जब लों सागर बारी। कहो कहत अब नितहिं कहैंगे जीओ लाल बिहारी ॥ भाग लहो सबही प्रेमी जन सुबस बसो ब्रिजबासी। हरीचन्द जग जुगल बिराजैं प्रीति रीति परकासी ॥

रहौं मैं सदा जुगल भुज छहियां। अब मत छाडो राधामोहन पकरि दीन की बहियां ॥ सदा बसाओ श्री ब्रिन्दाबन नित नव कुंजन महियां। हरीचन्द इक रूप निबाहो अब पन बिगरै नहियां ॥

तुम्हें कोउ खोजत है हो राधे। ना जानै कौन सांवरो सो ढोटा पीरो पट कटि बांधे ॥ बड़े बड़े नैन भरि रहे जल सों बचन कहत आधे आधे। बन बन पात पात करि खोजत प्यारी प्यारी रट नाधे ॥ कोमल मुख कुम्हलाइ रह्यो वाको खरो प्रीति पथ साधे। हरीचंद सखि चलु न दया करि हरि बिरहा की बाधे ॥ १ ॥

टरो धन अखियंन सों अब नाहिं। निवसो सदा सोहागिन राधा पुतरी सी दृग मांहि ॥ नीलनिचोल तरकुली कानन सिर सिंदूर मुख पान। काजर नैन सहजहीं भोरी मन मोहनि मुसकान ॥ सदा राज राजो वृन्दावन सुबस बसो ब्रज देस। बरसो प्रेम अमृत प्रेमिन पै नितहि स्याम घन भेस ॥ देखि यहै अब दूजो देखन परै न जब लों प्रान। हरीचंद निबहो स्वासा लगि यहै प्रेम की बान ॥ १ ॥

H891.43184
H474b

National Library
Cal

68530 (28-11-57)